

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४८

समग्र अनुवाद खण्ड

भारतीय भाषासँ मैथिली अनुवाद

गद्य आ पद्यक बहुविध समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ४८

## समग्र अनुवाद खण्ड : भारतीय भाषासँ मैथिली

पहिल संचयी गद्य-समीक्षा : समूह १-१४

संकलन आ मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

## मूल स्रोत आ अनुसंधानक सीमा

अध्ययनक आधार Anuvad\_Khand\_1.docxक मूल अनुक्रम-पञ्जी आ Anuvad\_Khand\_2.docxक संयुक्त अनूदित पाठ अछि। पहिलो फाइलमे प्रकाशकीय सूचना आ गद्य-पद्यक पञ्जी अछि; दोसरमे गद्य आ पद्यक वास्तविक मैथिली अनुवाद उपस्थित अछि। एहि पहिल संचयी बैचमे केवल चौदह गद्य-समूहक समीक्षा अछि।

तेलुगु, उडिया, गुजराती आ कन्नड़ मूल रचनाक पाठ तथा संबंधित मध्यवर्ती अंग्रेजी संस्करणसभ स्वतंत्र पूर्ण फाइलक रूपमे संलग्न नहि अछि। तँ मैथिली लक्ष्यपाठक स्वतंत्र साहित्यिक समीक्षा सम्भव अछि, मुदा त्रिभाषिक पाँति-दर-पाँति निष्ठाक अन्तिम निर्णय एहि आधारपर नहि कएल जा सकैत अछि। मूल लेखक, अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवादक आ मैथिली अनुवादकक श्रेय अलग राखल गेल अछि।

## गद्यक चौदह समूहक अनुक्रम

01. सदा लेल मित्र (जिगरी) — पेद्दिति अशोक कुमार (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : पी. जयलक्ष्मी
02. दलित लघुकथा : कौआ आ कारी मसि — कोलकलुरी इनोच आ विनोदिनी (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : के. पुरुषोत्तम
03. ध्वस्त मन्दिर — आदिवि बापिराजू (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी
04. अनुवादक कला (अंश) — वल्लमपाटी वेंकट सुब्बैया (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी
05. क्रूरता — करुणा टी. (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी
06. नानीलु : सूक्ति आ लघुपद्य — एन. गोपी (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी
07. हमर चित्रकला गुरु — खदीर बाबू (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी

08. जुम्मा — वेम्पल्ले शरीफ (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : जयलक्ष्मी पोपुरी
09. अभिशप्त — वी.वी.बी. रामा राव (तेलुगु); मध्यवर्ती अंग्रेजी : लेखक स्वयं
10. दुःख अप्रमिता — सरोजिनी साहू (उडिया); मध्यवर्ती अंग्रेजी : गोपा नायक
11. सुन्दरमक दू कथा : माताक कोरामे आ माजा वेलोक निधन — सुन्दरम (टी.पी. लुहार) (गुजराती); मध्यवर्ती अंग्रेजी : हेमांग देसाई
12. डर — दलपत चौहान (गुजराती); मध्यवर्ती अंग्रेजी : हेमांग देसाई
13. नजीर मंसूरीक दू कथा : समुद्री बाज आ हंगामा — नजीर मंसूरी (गुजराती); मध्यवर्ती अंग्रेजी : हेमांग देसाई
14. अन्हार — अशोक हेगडे (कन्नड); मध्यवर्ती अंग्रेजी : कमलाकर भट

## 01 सदा लेल मित्र (जिगरी)

मूल भाषाक लेखक : पेद्दिति अशोक कुमार | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : पी. जयलक्ष्मी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

मूल तेलुगु उपन्यास “जिगरी”क अंग्रेजी नाम “Friends Forever” आ मैथिली नाम “सदा लेल मित्र” अछि। शीर्षकक तीनू स्तरमे सम्बन्धक निष्ठा समान रहितहुँ भावक दिशा बदलैत अछि: “जिगरी” आत्मीय सम्बोधनक घनत्व रखैत अछि, अंग्रेजीमे मित्रताक दीर्घता स्पष्ट होइत अछि आ मैथिलीमे सम्बन्धक स्थायित्व अग्रसर अछि। अनुवादक-श्रेयक एहि त्रिस्तरीय पञ्जी पाठककें लक्ष्यपाठक कथा-शिल्पक प्रति सजग बनबैत अछि।

अंग्रेजी अनुवादकक निवेदनमे इमाम आ शादुलक सम्बन्ध, पशु-पालन आ सीमांत समुदायसँ जुड़ल जीविका-संकटक उल्लेख अछि। मनुष्य-पशु सम्बन्धक साहित्यिक मूल्यांकनमे केवल करुणा नहि, कायदे, अधिकार आ पारम्परिक जीविकाक तनावकें मूल कथा-क्रमसँ परखबाक आवश्यकता अछि। मूल तेलुगु आ प्रकाशित अंग्रेजी प्रतिक पूर्ण पाठ एहि दू संलग्नकमे स्वतंत्र रूपेँ नहि अछि; तें शब्दशः त्रिभाषिक समानता प्रमाणित कहब उचित नहि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 1; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 02 दलित लघुकथा : कौआ आ कारी मसि

मूल भाषाक लेखक : कोलकलुरी इनोच आ विनोदिनी | मूल भाषा : तेलुगु  
अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : के. पुरुषोत्तम | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

“कौआ”क आरम्भमे अच्चा, बेटी आ नाती सहित घरक पृष्ठभूमि आ कौआक कांव-कांव सामूहिक भयक ध्वनि-रूप बनबैत अछि। कौआ-समूहकें मारल गेल कुटुमक प्रतिक्रिया बुझबाक पात्रक प्रयत्न भय आ दोषारोपणक सम्बन्ध देखबैत अछि। कथा-समीक्षामे प्रतीककें सीधे एक अर्थमे बाँधि देब उचित नहि; परिवारक प्रतिक्रिया, आवाजक क्रम आ भावगत परिवर्तनक तुलना आवश्यक अछि।

“कारि मसि”क कथाभूमिमे मोहल्लाक बच्चे, घरेलू वातावरण आ लिखबाक रंगक चयनक एक तर्क देखाइत अछि: नील आ कारी मसि पसिन्न वा नापसिन्नक वर्गीकरणसँ जुड़ल अछि। एहि नियमक सम्भावित विडम्बना कथा-निर्णयमे केहन बदलैत अछि से पूरा पाठक बोधसँ जाँचब पड़त। दुनू कथा एक समूहमे रहितहुँ स्वतंत्र कृतिक रूपमे समीक्षा-पात्र छथि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 2; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

### 03 ध्वस्त मन्दिर

मूल भाषाक लेखक : आदिवि बापिराजू | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

मूल तेलुगु शीर्षक “पाडु देवालयम”क मैथिली रूप “ध्वस्त मन्दिर” अछि। ध्वस्त होएब केवल स्थापत्यक दशा नहि, स्मृति आ सामाजिक संस्थाक प्रतिमान बनि सकैत अछि; मुदा कथा वास्तविक रूपेँ कोन अर्थ विकसित करैत अछि, से शीर्षकसँ मात्र निश्चित नहि होयत। स्रोतक कथा-पाठक दृश्यक्रम आ वस्तु-वर्णनक विश्लेषण आवश्यक अछि।

ई रूपान्तरणकेँ मूल्याङ्कित करैत धार्मिक स्थल-संबन्धी सांस्कृतिक पदक मैथिली निकटार्थ, परिवेश आ कालक्रम बचल अछि वा नहि, एकर परीक्षण करबाक चाही। स्वतंत्र तेलुगु आ अंग्रेजी पूर्ण प्रति अनुपलब्ध भेला पर एहि अध्ययनमे मैथिली पाठक कथन-रूप आ स्रोत-पञ्जीपर भरोसा कएल गेल अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 3; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 04 अनुवादक कला (अंश)

मूल भाषाक लेखक : वल्लमपाटी वेंकट सुब्बैया | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

ई स्वतंत्र कथा नहि, अनुवाद-विचारक एक अंश अछि। मूल स्रोतक प्रकाशन-सूचना अनुसार ई रचना अनुवादकक अनुभव आ शास्त्रीय व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। अनुवाद-विषयक निबन्धकै कथा-संग्रहक अन्तर्गत राखलापर पुस्तकक विधागत मिश्रण स्पष्ट होइत अछि।

एहि अंशक समीक्षाक प्रश्न अछि: अनुवादक लेखकक उद्देश्य, संस्कृतिगत दूरी आ लक्ष्यभाषिक ग्रहणशीलताक बीच केहन मध्यस्थता करैत छथि? स्रोत-पाठ एक अंश होएबाक कारण लेखकक सम्पूर्ण तर्कक प्रतिनिधि मानल नहि जाय। ई सावधानी अनुवाद-विमर्शक प्रामाणिकताक मूल नियम अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 4; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 05 कूरता

मूल भाषाक लेखक : करुणा टी. | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

“कूरता”क मूल तेलुगु शीर्षकक स्रोत-विवरण अनुवाद-पञ्जीमे स्पष्ट अछि। शीर्षक एक नैतिक परिभाषा जकाँ सुनाइत अछि, मुदा कथाक घटना, पात्रक निर्णय आ शक्ति-संबंधक विशिष्ट गठन बिना एहन अमूर्त संज्ञाक अर्थ निर्धारित नहि होइत अछि।

समीक्षाक कसौटी दू स्तरक अछि: मैथिली रूपमे कथन-स्वर आ दृश्य-विन्यास, आ मूल तेलुगु सँ अंग्रेजी होइत मैथिलीमे आयल नैतिक अर्थक सम्भावित रूपान्तरण। स्वतंत्र मूल आ अंग्रेजी साक्ष्य नहि रहने दोसर स्तरपर निर्णायक पाँति-दर-पाँति आरोप वा प्रशंसा नहि कयल जा सकैत अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 5; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 06 नानीलु : सूक्ति आ लघुपद्य

मूल भाषाक लेखक : एन. गोपी | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

मूल पञ्जी “नानीलु : द लिटिल वन्स” केँ गद्य विभागमे दैत अछि, मुदा अनूदित पाठमे सूक्ति आ लघुकाव्यक विशिष्ट आकारक परिचय भेटैत अछि। ई विधागत भेद महत्त्वपूर्ण अछि: सघन कथ्यक छोट पाँति, ध्वनि आ अर्थक ठहराव सामान्य कथागद्यक कसौटीपर नहि परखल जाय।

मैथिलीमे लघुपद्यक अनुवादक परीक्षा मूलक अर्थ-संक्षेप, पंक्तिगत लय आ प्रसंगक व्यंजना सुरक्षित रहलापर आधारित होयत। पुस्तकमे अनुक्रमणिकाक विधा-वर्गीकरण संशोधनयोग्य विषय अछि; कृतिक साहित्यिक मूल्यांकन ओकर वास्तविक रूपक आधारपर आवश्यक अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 6; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 07 हमर चित्रकला गुरु

मूल भाषाक लेखक : खदीर बाबू | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

लेखक-परिचयक पाछाँ “हमर चित्रकला गुरु...” सन आत्मीय वाक्यसँ कथाभूमि आरम्भ होइत अछि। चित्रकला-शिक्षकक छवि गुरु-शिष्य सम्बन्ध, दृश्य-समझ आ स्मृतिक कथात्मक अवसर खोलैत अछि। किन्तु इएह उद्घाटनक आधारपर पूरा कथाक अंत अथवा घटनाक अनुमान बनाओल नहि जाय।

मैथिली लक्ष्यपाठमे “गुरु” पदक सांस्कृतिक मान सम्मानक परत अछि। मूल तेलुगु नाम, अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद आ मैथिली सम्बोधनक अर्थगत फरक जाँचबाक लेल दू अन्य स्रोतक पूर्ण पाठ आवश्यक अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 7; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 08 जुम्मा

मूल भाषाक लेखक : वेम्पल्ले शरीफ | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : जयलक्ष्मी पोपुरी | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

“जुम्मा” शीर्षक समय, समुदाय आ आस्था-संबंधी संकेत दऽ सकैत अछि, मुदा कथा-परिवेशक वास्तविक क्रिया-दिशा पढ़ने बिना कोनो धार्मिक निष्कर्ष निर्धारित करब अनुचित अछि। स्रोतक लेखक-परिचय आ अनुवादक-पञ्जी स्पष्ट रखने अछि जे एकर तीन भाषिक चरणक पहिचान परखबा मे सहयोगी अछि।

लक्ष्यभाषिक समीक्षामे सम्बोधन, वस्त्र, समय-सूचना आ समुदायगत शब्दक संस्कृतिगत सटीकता जाँचबाक चाही। मैथिलीक स्वाभाविक वाक्य-विन्यास आ मूल लेखकक सामुदायिक वातावरणक सम्भावित तनाव दुनूकै मान रखबाक जरूरत अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 8; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 09 अभिशप्त

मूल भाषाक लेखक : वी.वी.बी. रामा राव | मूल भाषा : तेलुगु

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : लेखक स्वयं | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

एहि रचनाक अंग्रेजी अनुवाद स्वयं मूल लेखकद्वारा कयल गेल अछि। ई स्थिति अनुवाद-शृंखलाक एक विशेष प्रकार अछि: मूल लेखक अंग्रेजी रूपक चयन करैत छथि, तकर बाद गजेन्द्र ठाकुर मैथिली रूप प्रस्तुत करैत छथि। एतय अंग्रेजी मध्यवर्ती स्तर अनुवादकक अलग व्याख्या नहि, मूल लेखकक स्वानुवाद अछि।

“अभिशप्त”क भावगत अर्थ निर्धारित करैत शाप अथवा नियतिक सरल व्याख्या थोपब नहि चाही। स्रोत-गद्यक पात्र-दृष्टि, समयक्रम आ कथन-स्वरक विशिष्ट तर्क देखल जाय। स्वानुवादो मूल पाठसँ भिन्न साहित्यिक निर्णय लऽ सकैत अछि—ई तथ्य अनुवादक भूमिकाकें और जटिल बनबैत अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 9; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 10 दुःख अप्रमिता

मूल भाषाक लेखक : सरोजिनी साहू | मूल भाषा : उड़िया

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : गोपा नायक | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

तेलुगु विभागक पाछाँ उड़िया कथाक प्रवेश एहि संकलनक बहुभाषिक विस्तार दर्शबैत अछि। “दुःख अप्रमिता”क नाममे दुःख आ विशेष व्यक्तित्वक सम्बन्ध सूचित होइत अछि, मुदा कथाक निर्णायक घटनाक निष्कर्ष शीर्षकसँ निकालब नहि।

ओड़िया मूल, गोपा नायकक अंग्रेजी रूप आ मैथिली रूपक त्रिस्तरीय श्रेय संरक्षण अपेक्षित अछि। मैथिलीमे एक क्षेत्रक सामाजिक जीवनक अनुवाद करैत स्थानीय परिवेशकेँ मिथिलाक सन बनाएब लक्ष्यभाषिक सहजताक सीमा बनि सकैत अछि; भिन्नता बचाओल साहित्यिक जिम्मेदारी अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 10, मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 11 सुन्दरमक दू कथा : माताक कोरामे आ माजा वेलोक निधन

मूल भाषाक लेखक : सुन्दरम (टी.पी. लुहार) | मूल भाषा : गुजराती

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : हेमांग देसाई | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

“माताक कोरामे” आ “माजा वेलोक निधन” एक लेखकक दू रचना होइतहुँ स्वतंत्र कथानक-संरचना अछि। “माजा वेलोक”क आरम्भमे प्राचीन परिवारक

मुखियाक मुद्रा, मीनारक छाहरि आ सार्वजनिक दृश्य उपस्थित अछि;

दृश्यात्मक स्थापत्य पात्रक सामाजिक स्थिति केहन स्थापित करैत अछि, एहि बिन्दुपर पाठाधारित समीक्षा संभव अछि।

दोसर कथाक पारिवारिक शीर्षकक अर्थ मातृत्वक सम्बन्धमे खुलि सकैत अछि, मुदा निष्कर्ष पूरा कथा-पाठसँ होएत। दुनू रचनाक अंग्रेजी मध्यवर्ती श्रेय हेमांग देसाई आ मैथिली गजेन्द्र ठाकुरक अछि। एतय गुजराती समाजक स्थानिकता रखैत मैथिली वाक्यक स्वाभाविक प्रवाह मूल्यांकनक प्रमुख कसौटी अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 11; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 12 डर

मूल भाषाक लेखक : दलपत चौहान | मूल भाषा : गुजराती

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : हेमांग देसाई | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

“डर” शीर्षक सघन भावात्मक संज्ञा थिक। भयक मनोवैज्ञानिक अनुभव, सार्वजनिक हिंसा अथवा सामाजिक बहिष्कार—एकर कथागत कारण स्वतंत्र पाठसँ स्पष्ट कएल जाय, लेखकक परिचय मात्रसँ नहि। स्रोत-पञ्जी लेखक आ मध्यवर्ती अनुवादक अलग चिन्हित करैत अछि।

समीक्षामे देखबाक अछि भयक प्रस्तुति कतेक शब्दक व्याख्या द्वारा, कतेक पात्रक क्रिया वा मौन द्वारा होइत अछि। केवल अनुवादकक तर्कगत वाक्यरचना देखिकऽ मूल गुजराती कथ्यक समग्र मूल्यांकन करब सम्भव नहि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 12; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

### 13 नजीर मंसूरीक दू कथा : समुद्री बाज आ हंगामा

मूल भाषाक लेखक : नजीर मंसूरी | मूल भाषा : गुजराती

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : हेमांग देसाई | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

दू कथाक शीर्षक कथाविश्वक भिन्न संकेत दैत अछि—“समुद्री बाज”मे प्रकृति अथवा वस्तुगत चिह्न, “हंगामा”मे सामाजिक उथल-पुथलक संकेत सम्भावित अछि। समीक्षा एतबे तक शीर्षक-विवेचन करैत अछि; कथक वस्तुगत केन्द्रीय प्रतीकक अन्तिम अर्थ मूल कथामे परखल जाय।

दू कथाकैँ एक प्रविष्टिमे राखलापर अनुवाद-तुलना लेल दृश्यक गति, संवादक सामाजिक स्तर आ क्षेत्रीय परिवेशक शब्दांश अलग चिन्हनाइ जरूरी अछि। गुजराती, अंग्रेजी आ मैथिली पदक बराबरी केवल शीर्षकक रूपसँ नहि नापल जा सकैत अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 13; मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## 14 अन्हार

मूल भाषाक लेखक : अशोक हेगडे | मूल भाषा : कन्नड़

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवाद : कमलाकर भट | अंग्रेजीसँ मैथिली : गजेन्द्र ठाकुर

कन्नड़ विभागक ई कथा अनुवाद-संकलनक गद्य खण्ड समाप्त करैत अछि।

“अन्हार” मैथिली शब्द दृश्यक अभाव, मानसिक स्थिति आ सामाजिक अवस्था सबहक सम्भावना खोलैत अछि, मुदा ई सम्भावना अछि, कथाक निश्चित कथानक नहि।

कन्नड़ मूल, कमलाकर भटक अंग्रेजी मध्यवर्ती पाठ आ गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली रूपक क्रम पाठककें स्पष्ट कहल गेल अछि। स्रोत-भेदक अर्थ जाँचबाक लेल पूर्ण मूल आ अंग्रेजी उपलब्ध नहि रहितो मैथिली लक्ष्यपाठक शैली, कथन-क्रम आ शीर्षकगत अर्थक अध्ययन अलग कयल जा सकैत अछि।

पाठाधार : *Anuvad\_Khand\_2.docx*, गद्य-विभागक समूह 14, मूल अनुक्रम : *Anuvad\_Khand\_1.docx*।

## गद्य-विभागक तुलनात्मक समीक्षात्मक निष्कर्ष

चौदह गद्य-समूहक भीतर उपन्यास, लघुकथा, अनुवाद-निबन्धक अंश आ लघुपद्यक सैद्धान्तिक परिचय सेहो अछि। एहि कारण विभागत अनुक्रमकें यन्त्रवत् “सभटा कथा” कहि नहि सकैत छी। एकहि संकलनक भिन्न विधाकें ओकर अपन बोधक साधन—कथाक घटनाक्रम, निबन्धक तर्क अथवा लघुपद्यक अर्थ-संक्षेप—सँ परखब चाही।

पुस्तकक विशेष उपलब्धि चारि भारतीय भाषाक रचना-विन्यासकें मैथिली पाठक धरि पहुँचाएब अछि। ई संचार दू चरणक अनुवादद्वारा भेल अछि, जकर परिणाममे लेखकत्व आ अनुवादक श्रेयक तीन स्तम्भ स्पष्ट रहबाक चाही। स्रोतक अनुक्रम एहि कार्यकें सहायता दैत अछि, आ पूरा पाठ उपलब्ध रहने लक्ष्यभाषिक निखारक स्वतंत्र जाँच सम्भव अछि।

## अनूदित पद्य : चौबीस समूहक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

पद्य विभागक ई चौबीस समूह अनुवादक मध्यवर्ती भाषा, विधा, कवि-स्वर आ समूहगत भिन्नताक आधारपर अध्ययन कएल गेल अछि। पृष्ठानुक्रम Anuvad\_Khand\_1.docxक मूल अनुक्रममे देल गेल अछि; कविता-पाठ Anuvad\_Khand\_2.docxमे अछि।

### 01 बोयी भीमन्नाक तेलुगु कविता

मूल रचनाकार : बोयी भीमन्ना | अनुवाद-मार्ग : के. पुरुषोत्तम | अध्ययन-परिसर : तेलुगु दलित काव्य

भीमन्नाक कविता-संग्रहक परिचयमे दलित काव्यधाराक सामाजिक पृष्ठभूमि आ गान्धी-युगसँ सम्बन्ध बताओल गेल अछि। अनूदित पद्यमे “खोपड़ी सभ जरि रहल अछि” सन दाहक बिम्ब भेटैत अछि; एकरा सीधे ऐतिहासिक तथ्य मानबाक बदला कविताक आन्तरिक प्रतिरोध-भाषाक रूपमे पढ़ब उचित अछि।

अंग्रेजी मध्यवर्ती पद्यक लय आ मूल तेलुगु सम्बोधनक संस्कार उपलब्ध मूल पाठ बिना निश्चित नहि कयल जा सकैत अछि। मैथिलीमे बिम्बक तेज बनल अछि कि नहि, ओकर जाँच कविताक पाँति-विराम आ ध्वनि-संरचनाक भीतर होयत।

स्रोत : Anuvad\_Khand\_1.docx, पद्य अनुक्रम 1; Anuvad\_Khand\_2.docx, पद्य खण्ड।

### 02 तेलुगु दलित महिला कविता

मूल रचनाकार : जे. सुभद्रा, चत्तलपल्ली स्वरूपरानी, दरिशे शशिनिर्मला, एम. गौरी आ महुरी विजयश्री | अनुवाद-मार्ग : के. पुरुषोत्तम | अध्ययन-परिसर : लैङ्गिक आ जातिगत अनुभव

एहि समूहमे “लोढ़ब”, “साड़ीक कोर”, “एक दलित स्त्री”, “मेहदी लागल हाथ” आ “अलिसम्माक स्राप” सन शीर्षक शरीर, श्रम, वस्त्र आ प्रतिरोधक भिन्न रूप सामने अनैत अछि। समूहक स्त्रीस्वरकें एक सामूहिक वक्तव्य बना देब उचित नहि; प्रत्येक कवयित्रीक बिम्ब आ वक्ताक स्थिति अलग सँ परखबाक आवश्यकता अछि।

महिला-दलित अनुभवक लक्ष्यभाषिक अनुवादमे सामाजिक सम्बोधन आ देह-संबंधी शब्दक लज्जाकरण वा सौम्यीकरण अर्थ बदलि सकैत अछि। कविता-दर-कविता जे शब्द स्पष्ट अथवा चुभैत अछि, ओकरा समतल मानक भाषा द्वारा सामान्यीकृत करब परिहार्य अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 2; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

### 03 रामा राव वी.वी.बी.क स्वानूदित कविता

मूल रचनाकार : वी.वी.बी. रामा राव | अनुवाद-मार्ग : मूल कवि स्वयं |

अध्ययन-परिसर : कवि-स्वानुवाद

एहि विस्तृत तेलुगु पद्य-समूहक अंग्रेजी प्रस्तुति स्वयं मूल कवि द्वारा सम्पन्न भेल अछि। तें अंग्रेजी पाठकें केवल तटस्थ सेतु नहि मानि, काव्यकर्ताक दोसर साहित्यिक निर्णय सेहो मानबाक चाही। मैथिली रूपान्तरण एहि स्वानूदित पाठक संरचना पबैत अछि, केवल मूल तेलुगुक छाया नहि।

कविताक विविध लय आ वक्तृत्व-रूपक तुलना बिना मूल प्रति सम्भव नहि; मुदा मैथिलीमे वाक्यगत ठहराव, लम्बा आ छोट पाँतिक अन्तर, प्रत्यक्ष सम्बोधन आ बिम्बक अभिप्रेत सांस्कृतिक दूरीक परीक्षण आवश्यक अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 3; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

### 04 एन. गोपीक पद्य

मूल रचनाकार : एन. गोपी | अनुवाद-मार्ग : जयलक्ष्मी पोपुरी | अध्ययन-परिसर : संक्षिप्त कविता आ बिम्ब

गोपीक कविता-समूहकें “नानीलु”क लघु-रूपक परिचयसँ जोडि देखला पर संक्षिप्तता केवल कम पाँति नहि, अर्थक सघन अनुशासन बनैत अछि। मूल तेलुगुक निश्चित अक्षर-संयोजनक जानकारी मैथिलीमे यथावत् छन्दसाम्य सिद्ध नहि करैत अछि।

कविता समीक्षाक प्रश्न अछि जे छोट बिम्बमे निहित आश्चर्य आ अन्तिम अर्थ-मोड़ मैथिली पाठमे कतबा स्पष्ट अछि। लक्ष्यभाषाक व्याकरणिक विस्तार मूलक नाप घटा सकैत अछि; ओहि स्थितिमे कलात्मक समानता निष्ठुर अक्षरगणनाक बदला भावात्मक प्रभावसँ जाँचल जाय।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 4; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 05 अरुणा एन.क तेलुगु कविता

मूल रचनाकार : अरुणा एन. | अनुवाद-मार्ग : जयलक्ष्मी पोपुरी | अध्ययन-परिसर : स्वर आ सामाजिक अनुभव

अरुणा एन.क अलग कवि-समूह राखब संकलनक सम्पादकीय उपलब्धि अछि; एहि तरहेँ स्रोत-साहित्यक व्यक्तिविशेषक स्वर अनेक लेखकक समूहमे विलीन नहि होइत अछि। मूल पृष्ठानुक्रममे संक्षिप्त आकारक एकाधिक पद्य उपस्थित अछि।

एहि अनुवादक परीक्षणमे वक्ता-स्वर, आन्तरिक संवाद आ स्थानीय शब्दक मूल्यांकन एकेक कविता अनुसार करब आवश्यक अछि। कवयित्रीक सामाजिक पहचान मात्रसँ कविता-कथ्यक निर्णय निश्चित नहि करबाक सावधानी महत्वपूर्ण अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 5; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 06 शीला सुभद्रा देवीक तेलुगु कविता

मूल रचनाकार : शीला सुभद्रा देवी | अनुवाद-मार्ग : जयलक्ष्मी पोपुरी | अध्ययन-परिसर : दीर्घ भाव आ निजी संवेदना

शीला सुभद्रा देवीक कविता-समूहकेँ कविता-संरचनाक अनुकूल पढ़बाक चाही; मूल संकलनमे कविक पृथक अनुक्रम एहि विशिष्टता लेल आधार दैत अछि। अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवादकक अन्य कृतिसँ परिचय भरि साहित्यिक निष्ठाक प्रमाण नहि बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय : खण्ड ४८  
स्वर, काल-व्यवस्था आ संवेदनाक उलटफेर मैथिलीमे कतेक सजीव बनल, एकर  
फैसला केवल मूल-अंग्रेजी प्रतिक तुलनामे हो सकत। वर्तमान अध्ययने मैथिली  
पाठक शब्दगत गति आ अर्थ-टूटनकेँ प्रश्न रूपमे चिन्हैत अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 6; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड।

## 07 के. शिवा रेड्डीक तेलुगु पद्य

मूल रचनाकार : के. शिवा रेड्डी | अनुवाद-मार्ग : जयलक्ष्मी पोपुरी | अध्ययन-  
परिसर : बिम्ब आ प्रतिरोध

कवि-विशेषक समूहक स्वतंत्र उपस्थिति स्रोत-पुस्तकक बहुस्वरता दर्शबैत अछि।  
रेड्डीक काव्य-रूपकेँ केवल सामाजिक संदेश वा विचारक सार बनायब कविता-  
कर्मक संकुचन होयत; शब्दचयन, पंक्तिक विराम आ बिम्बक अप्रत्याशित जोड़  
आलोचनाक केन्द्र बनबाक चाही।

अंग्रेजी मध्यवर्ती चरणसँ मैथिलीमे अबैत काल सांस्कृतिक पदक शाब्दिक  
समानता पर्याप्त नहि। जे स्थानिक बिम्ब तेलुगु समाजक अछि ओकरा  
मिथिलाक समतुल्य रूपमे बदलल गेल अछि कि नहि, से स्वतंत्र मूल साक्ष्यक  
उपर निर्भर रहत।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 7; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड।

## 08 अन्नवरम देवेन्द्रक तेलुगु कविता

मूल रचनाकार : अन्नवरम देवेन्द्र | अनुवाद-मार्ग : जयलक्ष्मी पोपुरी | अध्ययन-  
परिसर : विस्तृत पद्य-समूह

देवेन्द्रक कविता-संकलन एहि तेलुगु विभागमे अपेक्षाकृत विस्तृत पृष्ठक्षेत्र पबैत  
अछि। एहि विस्तारक अर्थ एकहि भावक पुनरावृत्ति नहि; विविध कविताक  
अपन काव्यगति, वस्तुपरक ध्यान आ अनुभूतिक संलग्नता परखबाक अपेक्षा  
अछि।

गद्य-जकाँ समतल पंक्ति विभाजन अथवा अनुवादमे जोड़ल स्पष्टीकरण मौलिक काव्यक गहनता बदलि सकैत अछि। एतय अर्थक सहजता आ काव्यात्मक अपरिचितताक बीच संतुलन समीक्षा योग्य अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 8; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 09 नरसिंह मेहताक गुजराती पद्य

मूल रचनाकार : नरसिंह मेहता | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर : भक्ति-काव्यक अनुवाद

नरसिंह मेहताक गुजराती कविता ऐतिहासिक भक्ति-परम्परासँ जुड़ल कवि-नामक अंतर्गत प्रस्तुत अछि। मैथिलीमे भक्ति-पदक प्राचीन सम्बोधन, सामूहिक गायनक सम्भावना आ लयगत घनत्व नष्ट भेल तँ काव्यगत दूरी आएत।

समय, धर्म आ भाषाक भिन्नतालोकनि मूलक सन्दर्भकेँ लक्ष्यभाषामे अनावश्यक संस्कृतनिष्ठा वा अत्यधिक बोलचालक रूप देबासँ बचत। एहि मूल-अंग्रेजी-मैथिली त्रिसम्बन्धक जाँच मूल गुजराती पाठ भेटलाक बाद बेसी निश्चित भऽ सकत।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 9; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 10 हेमांग देसाईक स्वयं अनूदित गुजराती कविता

मूल रचनाकार : हेमांग देसाई | अनुवाद-मार्ग : कवि स्वयं | अध्ययन-परिसर : लेखक-स्वानुवाद

हेमांग देसाई एहि समूहमे कवि सेहो छथि आ अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवादक सेहो। तँ श्रेयक पञ्जीमे हुनक दोहरी भूमिका स्पष्ट रहबाक चाही। अंग्रेजी रूप हुनकर अपन काव्यिक पुनर्लेखनक अवसर प्रदान करैत अछि, जकरा मूल गुजरातीसँ स्वतः शाब्दिक एकरूप नहि कहल जा सकैत अछि।

मैथिलीमे पाँच कविताक समूहक परीक्षा मूलक प्रत्यक्ष अनुकृति खोजबाक बदला स्वानूदित अंग्रेजी पाठक स्वतंत्र काव्य-निर्णय आ शब्दध्वनिक पुनर्निर्माणपर होयत।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 10; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड ।

## 11 राजेन्द्र पटेलक गुजराती कविता

मूल रचनाकार : राजेन्द्र पटेल | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर  
: छन्द आ स्वर

राजेन्द्र पटेलक कविता अलग समूहमे संकलित अछि। स्रोत-भाषाक  
लयविधानकें अंग्रेजी होइत मैथिलीमे रखनाइ तिहरे स्तरक परिवर्तन थिक; तें  
केवल शब्दार्थ सही रहने मूलक ध्वनिक एकत्व सुनिश्चित नहि होइत अछि।  
आलोचना कविताक भावक बहाव, बिम्बक परस्परता आ लक्ष्यपाठमे सहज  
उच्चारणक प्रश्न उठबैत अछि; प्रत्यक्ष मूलक साक्ष्य नहि होने तुलनात्मक  
निष्कर्ष सम्भावित रूपमे मात्र राखल गेल अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 11; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड ।

## 12 पीयूष ठक्करक गुजराती पद्य

मूल रचनाकार : पीयूष ठक्कर | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर  
: लघु पद्यक विन्यास

ठक्करक कविता अल्प पृष्ठक समूह अछि; छोट आकारकें कम साहित्यिक  
महत्त्व बुझब अनुचित अछि। लघु कविता अर्थक एकाग्रता आ अनकहल रहल  
अंशक सहारे प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

मैथिली वाक्य-संयोजन स्रोतक संक्षिप्तता पर अतिरिक्त व्याख्या लादैत अछि  
कि नहि, ई विशिष्ट मूल्यांकनक प्रश्न अछि। अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवादकक  
चयन सेहो छोट कविता पर खास असर कऽ सकैत अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 12; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड ।

### 13 पन्ना त्रिवेदीक गुजराती कविता

मूल रचनाकार : पन्ना त्रिवेदी | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर :  
व्यक्तिनिष्ठ आवाज

पन्ना त्रिवेदीक पद्यकें संकलनमे अलग पहिचान देल गेल अछि। मूल कवितासँ अनुवादित स्वरक लिङ्ग, सम्बोधन आ भावगत दूरीक रक्षा शब्दशः समानतासँ बेसी जटिल अछि; आ ओहि कसौटीक अन्तिम निर्णय मूल स्रोतसँ होयत।

स्त्री-कवि होएबाक आधारपर सभ कविता स्वतः स्त्रीवादी घोषणापत्र नहि बनैत; मैथिली पाठमे जतेक कहल गेल अछि, आलोचना ओकर पाठ-साक्ष्यकें प्राथमिकता देत।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 13; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड।

### 14 बाबू सुथारक गुजराती कविता

मूल रचनाकार : बाबू सुथार | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर :  
सामाजिक पद आ अर्थ

बाबू सुथारक पद्य-समूहमे कवि-विशेषक अलग शब्द-दुनिया देखबाक अवसर अछि। समाज-संबंधी पद वा व्यवसाय-सम्बन्धी संकेत जँ उपस्थित हो तकरा मूल सांस्कृतिक आधार परखल जाय; कविक नामसँ मात्र विषय निर्धारित नहि होइत अछि।

अनुवादित पंक्तिमे जहाँ लक्ष्यभाषा अत्यधिक सामान्यीकरण करैत अछि ओतय विवेकपूर्ण टिप्पणीक जरूरत अछि। तेसर चरणक मैथिली अनुवादकें स्रोत-भाषाक बदलामे पाठक भाषा बनबाक अपना गुणसँ सेहो परखल जाय।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 14; *Anuvad\_Khand\_2.docx*,  
पद्य खण्ड।

### 15 गुजराती दलित कविता

मूल रचनाकार : अनीश गारंगे, राजेन्द्र वडेल आ उमेश सोलंकी | अनुवाद-मार्ग :  
हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर : दलित काव्यक त्रिस्वर

एहि समूहक “पोस्टर”, “सम्भोग”, “लोक, जमि जाए” आ “खरडाक डाँट सभ” सन शीर्षक सामाजिक लिखावट, देह, समूह आ शब्दक प्रतिरोधक अलग संकेत प्रस्तुत करैत अछि। एकहि ‘दलित कविता’ विभागमे अनेक कविक समावेश साहित्यिक तुलनाक सम्भावना दैत अछि, मुदा सबकें एकहि प्रतिरोध-कथामे विलीन नहि करब।

काव्यगत व्यंग्य आ लोक-सम्बोधनक चोट लक्ष्यभाषिक सज्जन भाषा द्वारा मृदु भऽ गेल अछि कि नहि, एकर परीक्षण आवश्यक अछि। गुजराती मूल उपलब्ध नहि होएबाक सीमा कारण एहि अध्ययनमे अर्धगत क्षतिक निश्चित आरोप नहि कएल गेल।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 15; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 16 गुलाम मोहम्मद शेखक गुजराती कविता

मूल रचनाकार : गुलाम मोहम्मद शेख | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई आ माला मारवाह | अध्ययन-परिसर : दू अंग्रेजी अनुवादक

एहि कवि-समूहमे अंग्रेजी मध्यवर्ती श्रेयमे दू गोटेक नाम अछि। कओन कविता के द्वारा अनूदित अछि, एकर कविता-वार स्पष्ट पञ्जी आवश्यक अछि; संयुक्त श्रेयकें एकहि समान पाठ-निर्णय मानब गलत होयत।

मैथिली पद्यमे दृश्य-विन्यास, सांस्कृतिक वस्तु आ लयक विवेचन कलात्मकता आ स्रोत-सम्बन्ध दुनूकें समेटत; दृश्यात्मकता लऽ कऽ मूल कविता कें सरल वर्णनक पाठ नहि बनाएब चाही।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 16; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 17 अजय सरवैयाक गुजराती कविता

मूल रचनाकार : अजय सरवैया | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर : भावगत गति आ पंक्ति

अजय सरवैयाक स्वतंत्र कविता-समूहक उपस्थिति गुजराती पद्य-विभागक भाषिक विस्तार अछि। छोट-बड पंक्तिक क्रम आ कविताक छूटी मे अर्थक ऊर्जाकेँ बुझबाक आवश्यकता अछि।

अंग्रेजी माध्यमक अनुवाद कविता-शिल्पक सम्पूर्ण हस्तान्तरणक प्रमाण नहि; मैथिली पाठक अपना अन्तःसंगीत आ मूलक ग्रहणक्षमताक तुलना साक्ष्य-सीमाक भीतर करब उचित अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 17; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 18 गनी दहीवालाक गुजराती पद्य

मूल रचनाकार : गनी दहीवाला | अनुवाद-मार्ग : हेमांग देसाई | अध्ययन-परिसर : गीतात्मकता आ लय

दहीवालाक कविता संकलनमे छोट पृष्ठ-सीमा पबैत अछि। काव्य-गीतक भाव-विन्यासमे श्रव्य लय विशेष महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि; मुदा वास्तविक मात्रिक स्वरूप बिना मूल उद्धरणक फैसला नहि कयल जा सकैत अछि।

लक्ष्यभाषाक उच्चारणसँ पाँति लयात्मक सुनाइत अछि वा गद्य-जकाँ चलैत अछि, ई व्यावहारिक उच्चस्वर-पाठक सहायतासँ समीक्षा करबाक योग्य प्रश्न अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 18; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 19 बासुदेव सुनानीक ओडिया दलित कविता

मूल रचनाकार : बासुदेव सुनानी | अनुवाद-मार्ग : सैलेन राउत्रे | अध्ययन-परिसर : ओडिया दलित अनुभव

स्रोतक कवि-परिचय सुनानीकेँ ओडिया दलित काव्य-धारामे स्थान देइत अछि। काव्यक सामाजिक संदर्भकेँ कविता-मात्रक सूक्ष्मता सँ अलग राखि पढ़ब नहि चाही; बिम्ब आ व्याकरणिक वक्ता समाजमे अनुभवक स्थान बनबैत अछि।

अंग्रेजी मध्यवर्ती अनुवादक सैलेन राउत्रेक श्रेय साफ अछि। मैथिली रूपमे अन्य भाषाक जातिसंबंधी विशिष्ट सम्बोधनकें स्थानीय लेबलसँ बदलि देब अर्थक समरूपता सिद्ध नहि करैत; एहि सन्दर्भकें मूल प्रमाणसँ जाँचब चाही।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 19; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 20 भरत माँझीक उड़िया पद्य

मूल रचनाकार : भरत माँझी | अनुवाद-मार्ग : सैलेन राउत्रे | अध्ययन-परिसर : लघु ओड़िया कविता

भरत माँझीक कविता छोट स्वतंत्र समूह अछि। कविक व्यक्तिगत स्वरसँ शब्दक समुदायगत अर्थ कतेक जुड़ल अछि, से कविताक दृश्य आ सम्बोधनसँ ठहराएब चाही, परिचय मात्रसँ नहि।

तीन भाषामे कविता गमनक कारण छोट व्यंजना वा स्थानीय संकेत गुम होबाक जोखिम रहैत अछि। मूल उड़िया आ अंग्रेजी पाठ अनुपलब्ध भेला पर मैथिली कविता-स्वरक आलोचना अलग स्तरपर राखल गेल अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 20; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## 21 इप्सिता सारंगीक स्वानूदित उड़िया कविता

मूल रचनाकार : इप्सिता सारंगी | अनुवाद-मार्ग : कवयित्री स्वयं | अध्ययन-परिसर : कवि-स्वानुवाद

इप्सिता सारंगी मूल उड़िया रचना अंग्रेजीमे स्वयं अनूदित करैत छथि। कविता बनब आ अनुवाद करब एकहि व्यक्तिक दू निर्णय थिक; मैथिलीमे ओकर अभिव्यक्ति तेसर भाषा-पदमे पुनः प्रवेश करैत अछि।

कवयित्रीक स्वानुवादक स्वतन्त्रता केना मूल भाव बदलि सकैत अछि, तकर साक्ष्य बिना पूर्ण निर्णय असम्भव अछि; मुदा श्रेयक एही भेदक स्पष्टता साहित्य-इतिहासक आधार थिक।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 21; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड ।

## 22 इप्सिता सारंगीक हरिकृष्ण दास-अनूदित कविता

मूल रचनाकार : इप्सिता सारंगी | अनुवाद-मार्ग : हरिकृष्ण दास | अध्ययन-परिसर : एक कवयित्री, दू मध्यवर्ती रूप

आगाँक समूहमे वही कवयित्रीक अंग्रेजी अनुवाद हरिकृष्ण दास द्वारा कएल गेल अछि। पिछला समूहक कवि-स्वानुवादसँ ई अलग स्थिति—दू मध्यवर्ती अनुवादकक चयनपद्धति एक नहि।

एहि कवयित्रीक दू अंग्रेजी मार्गक तुलना एक उपयोगी समीक्षात्मक प्रयोग होयत, मुदा ई निष्कर्ष कहबाक लेल वास्तविक अंग्रेजी रूपसभ देखबाक आवश्यकता अछि। पुस्तकक अनुक्रम सम्पादनगत सम्भावना उपलब्ध करबैत अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 22; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड ।

## 23 भिखारी ठाकुरक भोजपुरी गीत

मूल रचनाकार : भिखारी ठाकुर | अनुवाद-मार्ग : मध्यवर्ती अंग्रेजी नहि | अध्ययन-परिसर : भोजपुरीसँ प्रत्यक्ष मैथिली

एहि एक समूहक अनुवाद-मार्ग बाकि संकलनसँ अलग अछि: मूल भोजपुरीसँ सीधे मैथिली। लोकगीतक गीतत्व, तुक, लोकसंवाद आ रंगपरम्परा एतय समीक्षाक प्राथमिक कसौटी अछि, अंग्रेजी मध्यवर्ती पाठक उपस्थिति नहि।

भिखारी ठाकुरक मौखिक परम्परा आ कैथी-लिखित पाठक सन्दर्भ स्रोतक परिचयमे प्रस्तुत अछि। मौखिक, लिखित आ लक्ष्यभाषिक रूपक भेद सुरक्षित राखब गीतक ऐतिहासिक प्रमाणिकता लेल आवश्यक अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 23; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड ।

## 24 रहमान राहीक कश्मीरी कविता

मूल रचनाकार : रहमान राही | अनुवाद-मार्ग : एस. एल. सन्धु | अध्ययन-

परिसर : कश्मीरीसँ अंग्रेजी होइत मैथिली

राहीक “छाह सभ” कविता आ ज्ञानपीठ समारोहक प्रकाशकीय सन्दर्भ स्रोतमे उपस्थित अछि। “छाह” सन बिम्ब प्रकाशक अनुपस्थिति मात्र नहि, स्मृति आ व्यक्तित्वक छायाक अर्थ सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि—मुदा निश्चित रूपसँ केहन, से कविता-पाठक क्रमपर निर्भर।

कश्मीरीसँ एस. एल. सन्धुक अंग्रेजी अनुवाद आ तकर बाद मैथिली रूपक स्पष्ट श्रेय अनिवार्य अछि। स्रोतक प्रकाशकीय सम्मान-विवरण केँ साहित्यिक गुणवत्ता प्रमाणक रूपमे स्वतः प्रयोग नहि कएल गेल अछि।

स्रोत : *Anuvad\_Khand\_1.docx*, पद्य अनुक्रम 24; *Anuvad\_Khand\_2.docx*, पद्य खण्ड।

## गद्य-पद्यक समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

अनुवाद-संकलनक चौदह गद्य-समूह आ चौबीस पद्य-समूह मिलि अड़तीस मूल समीक्षा-समूह बनैत अछि; समूहक भीतर एकाधिक कथा आ कविताक अस्तित्व अलग तथ्य अछि। पुस्तकक मूल अनुक्रम एहि विविधताकें तेलुगु, उड़िया, गुजराती, कन्नड़, भोजपुरी आ कश्मीरी भाषासँ जोड़ैत अछि। तुलनात्मक समीक्षामे एहिमे अलग विधागत मानदण्ड लागू होइत अछि: उपन्यासक कथाविस्तार, लघुकथाक दृश्य-संयम, अनुवाद-निबन्धक तर्क आ कविताक ध्वनि।

संकलनक गद्य भागमे पी. जयलक्ष्मी, के. पुरुषोत्तम, गोपा नायक, हेमांग देसाई आ कमलाकर भटक मध्यवर्ती अंग्रेजी श्रेय अछि। पद्यमे कवि स्वयं अंग्रेजी रूप देनिहार आ आन अनुवादकक प्रयोग दुनू अछि। भिखारी ठाकुरक भोजपुरी गीत प्रत्यक्ष मैथिली अनुवादक अलग स्थिति प्रस्तुत करैत अछि। एहि विविधतालेल अनुवाद अध्ययनक एकहि निष्ठा-मापक पर्याप्त नहि।

एहि आलोचनाक प्रमाण-सीमा सुस्पष्ट अछि: संलग्न मैथिली लक्ष्य-पाठ मूल रूपेँ पढ़ल गेल अछि, मुदा स्वतंत्र तेलुगु-गुजराती-उड़िया-कश्मीरी मूल आ मध्यवर्ती अंग्रेजी पुस्तकसभ एहि फाइल-द्वयक रूपमे पूर्ण स्रोत नहि अछि। तँ मूल पाठक बिनु कोई पाँति, रूपक वा छन्दक निश्चित अर्थहानि आरोपित नहि कएल गेल अछि। अनुवादक श्रेय, मूल अनुक्रमक स्थान आ लक्ष्यपाठक समीक्षाक भेद एकर प्रमुख संपादकीय पद्धति अछि।

अगिला पाठालोचनाक आवश्यक कार्य मूल स्रोत, अंग्रेजी मध्यवर्ती प्रति आ मैथिली लक्ष्य-पाठक त्रिस्तरीय समकालिक पञ्जी होयत। एहि प्रकाशनक स्वतंत्र आलोचनात्मक निष्कर्ष एही स्थिर आधारपर सीमित अछि।

## ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर (अनुवादक आ सम्पादक)। गजेन्द्र ठाकुर समग्र अनुवाद खण्ड। Anuvad\_Khand\_1.docx (प्रकाशकीय विवरण, मूल अनुक्रमणिका) आ Anuvad\_Khand\_2.docx (अनूदित गद्य आ पद्यक सम्पूर्ण संयुक्त पाठ)।

# गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

## खण्ड ४८

भारतक अनेक भाषा-साहित्यक गद्य,  
पद्य आ अनुवाद-पद्धतिक अध्ययन।  
चौदह गद्य आ चौबीस पद्य-समूहक  
पाठाधारित समालोचनात्मक पुनर्पाठ;  
अनुवाद-श्रेय आ प्रमाणक सीमा।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



[www.videha.co.in](http://www.videha.co.in)



GitHub Videha Archive

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाड़ नौ इञ्च — विदेह